अध्याय 15

# भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताएं एवं नवीन प्रवृत्तियां

स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत दयनीय स्थिति में थी। उपनिवेशकाल में अंग्रेजों ने भारतीय कृषि, उद्योग, व्यापार इत्यादि को अपूरणीय हानि पहुंचाई। जब भारत स्वतंत्र हुआ तो भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती इसे विकास के मार्ग पर तीव्र गति से अग्रसर करने की थी। पिछले दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास हेतु किये गये प्रयत्नों के कारण इसकी प्रकृति मे व्यापक परिवर्तन हुआ है। 1950 के दशक में अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये जिन्होंने, भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति तथा विकास पथ को निर्धारित किया। 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों (उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण) ने भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य को निर्धारित करने में विशेष भूमिका निभाई है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था एक अविकसित या पिछड़ी हुई तथा विकासशील अर्थव्यवस्था के मिश्रित लक्षण व्यक्त करती है।

अर्थव्यवस्था– एक देश या क्षेत्र की वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, व्यापार, उपभोग आदि क्रियाओं से जुड़ा तंत्र अर्थव्यवस्था कहलाता है। जैसे– भारतीय अर्थव्यवस्था।

## 15.1 भारतीय अर्थव्यवस्था एक अविकसित अर्थव्यवस्था के रूप में

प्रति व्यक्ति आय तथा जीवन की गुणवत्ता (जिसे शिक्षा तथा स्वास्थ्य की स्थिति से देखा जा सकता है) का निम्न स्तर अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन को बताता है। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, उत्पादन की पुरानी तकनीक, छिपी हुई तथा संरचनात्मक बेरोजगारी की अधिकता, उच्च जनसंख्या वृद्धि दर आदि अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन के प्रमुख लक्षण हैं। हमारी अर्थव्यवस्था में अविकसित अर्थव्यवस्था के ये लक्षण विद्यमान हैं।

### (i) निम्न प्रति व्यक्ति आय

भारत में प्रति व्यक्ति आय का स्तर बहुत कम है जो इसके अविकसित अर्थव्यवस्था होने का प्रतीक है। विश्व बैंक के अनुसार 2015 ई. में भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 1590 अमेरिकी डॉलर थी। प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में भारत का स्थान विश्व में 170 वां रहा। भारत की प्रति व्यक्ति सकल आय न केवल अमेरिका, इंगलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी जैसे विकसित देशों से कम है, बल्कि चीन तथा श्रीलंका जैसे पड़ोसी देशों की तुलना में भी कम है। प्रति व्यक्ति आय के निम्न स्तर के फलस्वरूप लोगों का जीवन स्तर भी निम्न बना रहता है।

### (ii) जीवन की निम्न गुणवत्ता

शिक्षा और स्वास्थ्य जीवन की गुणवत्ता के दो सबसे प्रभावी निर्धारक और संकेतक हैं। ये मानव कल्याण के अभिन्न अंग हैं। इनके अभाव में आय अर्थहीन हो जाती है। जब लोगों में ज्ञान प्राप्ति तथा स्वस्थ रूप से जीने की क्षमता होती है तभी वह आय का उपयोग करने में सक्षम हो पाते हैं। भारत में शिक्षा का स्तर बहुत कमजोर है जो निम्न साक्षरता दर से प्रतिबिम्बित होता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत थी। जनसंख्या का लगभग एक चौथाई भाग आज भी निरक्षर है। स्वास्थ्य–स्तर को जन्म के समय जीवन–प्रत्याशा से मापा जा सकता है। विश्व बैंक के अनुसार भारत में वर्ष 2014 में जन्म के समय जीवन–प्रत्याशा 68 वर्ष थी। यह जापान तथा चीन की तुलना में बहुत कम है। शिक्षा तथा स्वास्थ्य का निम्न स्तर भी भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप को व्यक्त करता है।

जन्म के समय जीवन प्रत्याशा–चालू जनांकिकीय स्थितियों में एक नवजात की प्रत्याशित औसत आयु का सांख्यिकीय माप जन्म के समय जीवन प्रत्याशा कहलाती है।

### (iii) गरीबी की समस्या

सभी अविकसित राष्ट्रों की तरह भारत भी गरीबी की समस्या का सामना कर रहा है। सुरेश तेन्दुलकर के अनुमानों के अनुसार वर्ष 2011–12 में भारत में 21.92 प्रतिशत लोग गरीब थे। गरीबी वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में भी असफल हो जाता है। स्वतन्त्रता के पश्चात् अभी तक गरीबी का निवारण नहीं हो पाया है। इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौती माना जा सकता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की दिशा में बहुत धीमी प्रगति हुई है। अन्य देशों की तुलना में यह प्रगति प्रभावहीन प्रतीत होती है। विकास के लाभ समाज के निम्न एवं कमजोर वर्गों तक नहीं पहुँच पाये हैं।

आज भी जनसंख्या का लगभग एक चौथाई भाग निर्धनता के दुश्चक्र में फंसा हुआ है। निर्धनता की समस्या के रहते कोई भी राष्ट्र पिछड़ेपन से बाहर नहीं आ सकता। अतः हमारी अर्थव्यवस्था निश्चित ही एक अविकसित अर्थव्यवस्था है।

### (iv) कृषि पर अत्यधिक निर्भरता

जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था का विकास होता है, कृषि क्षेत्र पर इसकी निर्भरता में कमी आती है तथा उद्योग एवं सेवा क्षेत्र पर निर्भरता में वृद्धि होती है। यद्यपि भारत में भी कृषि पर निर्भरता में कमी आयी है, लेकिन यह कमी धीमी रही है। स्वतंत्रता के समय लगभग 72 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित थी। आज भी कुल रोजगार का लगभग 49 प्रतिशत कृषि तथा सहायक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। कृषि–क्षेत्र से गैर कृषि–क्षेत्र की ओर श्रम का पलायन तो हुआ है, लेकिन यह बहुत धीमा रहा है। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप का प्रतीक है।

### (v) जनांकिकीय कारक

अनेक जनांकिकीय कारक भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन को व्यक्त करते हैं। भारत में जन्म–दर बहुत ऊँची हैं। मातृ मृत्यु दर, बाल मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर का ऊँचा स्तर भी बना हुआ है। भारतीय जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत अधिक है। 2001 से 2011 के दशक में भारत की जनसंख्या की वृद्धि दर 17.64 प्रतिशत रही है। ऐसा कहा जा सकता है कि भारत में प्रतिवर्ष होने वाली जनसंख्या की वृद्धि, आस्ट्रेलिया महाद्वीप की कुल जनसंख्या के लगभग बराबर है। भारतीय जनसंख्या का आकार बहुत बड़ा है तथा यह निरन्तर तेजी से बढ़ता जा रहा है।

जनांकिकी– मानव जनसंख्या का वैज्ञानिक तथा सांख्यिकीय अध्ययन जनांकिकी कहलाता है।

### (vi) बेरोजगारी की समस्या

अविकसित राष्ट्रों का एक मुख्य लक्षण संरचनात्मक तथा छिपी हुई बेरोजगारी की समस्या है। इन राष्ट्रों की दोषपूर्ण संरचना के कारण तथा लगातार होते संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण यह बेरोजगारी उत्पन्न होती है। विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण मांग की संरचना भी परिवर्तित हो जाती है, जिससे मांग तथा पूर्ति में असंतुलन हो जाता है। भारत की कृषि पर अत्यधिक निर्भरता तथा उद्योगों एवं सेवा क्षेत्र के धीमे विकास के कारण इसे छिपी हुई बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। यद्यपि भारत में बेरोजगारी के सभी प्रकार पाये जाते है, लेकिन यहां संरचनात्मक तथा छिपी हुई बेरोजगारी की समस्या सर्वाधिक गम्भीर है। छिपी बेरोजगारी का अर्थ है कि व्यक्ति रोजगार में लगा हुआ तो दिखाई देता है लेकिन उसका उत्पादन में योगदान बहुत कम अर्थात् लगभग शून्य होता है। भारत में एक कृषक परिवार के सभी सदस्य घरेलू कृषि कार्य में लगे हुए होते हैं, लेकिन उनमें अनेक सदस्यों का योगदान लगभग शून्य रहता है। छिपी बेरोजगारी का सही अनुमान लगाना अत्यधिक कठिन है।

### (vii) पिछड़ी हुई तकनीक

अर्थव्यवस्थाओं के पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण उत्पादन की तकनीक का पिछड़ा हुआ होना है। आधुनिक तकनीक के अभाव में उत्पादकता का स्तर निम्न बना रहता है। लम्बे समय तक यह माना जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ही विकास का सबसे प्रभावशाली कारक है, लेकिन जापान के तीव्र विकास ने तकनीकी के योगदान को सिद्ध कर दिया है। भारत में धीमे आर्थिक विकास का एक कारण नवीन तकनीक का अभाव है। तकनीक विकास हेतु भारत में बहुत कम खर्च किया जाता है। शोध और अनुसंधान को वांछित महत्व नहीं मिल पाने के कारण आज भी भारत तकनीकी दृष्टि से अविकसित है।

### (viii) अन्य विशेषताएं

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त निम्न मानव विकास, व्यापक असमानतायें, कमजोर आधारसंरचना आदि भी भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित रूप को व्यक्त करते हैं। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा तैयार किये गये मानव विकास सूचकांक में वर्ष 2015 की रिपोर्ट में भारत का स्थान 130 वाँ रहा। इस सम्बन्ध में हम मध्यम मानव विकास सूचकांक वाले देशों में सम्मिलित है। अपने पड़ोसी देशों चीन (90 वां स्थान) तथा श्रीलंका (73 वां स्थान) से हम बहुत पीछे हैं। भारत में विद्यमान आर्थिक तथा गैर आर्थिक विषमताएं भी चिन्तनीय हैं। यहाँ आय तथा धन का वितरण भी बहुत अधिक असमानतापूर्ण है तथा सामाजिक संरचना में अनेक असमानताएं व्याप्त हैं। भारत में लिंग के आधार पर भी भारी असमानताएं और शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में भारी विषमतायें हैं। भारत की आधारसंरचना भी बहुत कमजोर है। जिसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था निम्न उत्पादकता, ऊँची उत्पादन लागतों तथा उत्पादन में धीमी वृद्धि का शिकार रही है। स्पष्ट है कि भारतीय अर्थ व्यवस्था एक अविकसित अर्थव्यवस्था है।

**आधार संरचना –**

आधार संरचना का तात्पर्य उन वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता से है जो अर्थव्यवस्था की कार्य पद्धति को सुगम बनाते हैं। ये उत्पादकता में वृद्धि करते हैं तथा आर्थिक विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। सड़क, विद्युत, शिक्षा, स्वास्थ्य, बीमा, बैंकिंग आदि आधार संरचना के प्रमुख उदाहरण हैं।

## 15.2 भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक अविकसित अर्थव्यवस्था है, लेकिन यह पूर्णतया सही नहीं हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था तेज गति से विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। यहां पिछले वर्षों के दौरान प्रभावी आर्थिक एवं सामाजिक सुधार के साथ अनेक ऐसे अनुकूल परिवर्तन हुए हैं, जिनके फलस्वरूप इसे विकासशील अर्थव्यवस्था कहा जाना अधिक उपयुक्त होगा। भारत की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय लगातार तेजी से बढ़ रही है तथा संरचनात्मक परिवर्तन अनुकूल दिशा में हो रहे हैं।

### (i) राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में सतत् एवं तीव्र वृद्धि

भारत की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में होने वाली सतत एवं तीव्र वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकासशील स्वरूप का सर्वाधिक प्रभावशाली लक्षण है। 1950 से 1980 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर मात्र 3.5 प्रतिशत प्रति वर्ष रही। डॉ0 राजकृष्णा ने इसे हिन्दू विकास दर कहा है। 1980 के दशक में विकास दर 5 प्रतिशत से अधिक हो गयी और 1991–2011 के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था 6.8 प्रतिशत प्रतिवर्ष की औसत दर से बढ़ी है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012 ) के दौरान भारत की विकास दर 8 प्रतिशत रही। वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत की आर्थिक विकास की दर में सुधार 1980 के दशक से ही प्रारम्भ हो गया था, लेकिन उल्लेखनीय प्रगति 1990 के दशक के आर्थिक सुधारों के पश्चात् हुई है। वर्तमान सरकार द्वारा किये गये सुधारों एवं प्रयासों के कारण भारतीय अर्थव्यस्था तीव्रता के साथ आगे बढ़ रही है।

आर्थिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण मापदण्ड प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि है। 1950–51 से 1990–91 की अवधि के दौरान भारत की प्रति व्यक्ति आय लगभग 1.6 प्रतिशत वार्षिक की औसत दर से बढ़ी थी। 1990–91 के पश्चात् अधिकांश वर्षों में प्रति व्यक्ति आय की वार्षिक वृद्धि दर 5 प्रतिशत से अधिक बनी हुई है। वर्ष 2015–16 में प्रति व्यक्ति आय में 6.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय की यह सतत तथा तीव्र वृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था की एक अच्छी उपलब्धि कही जा सकती है।

सामान्यतः वास्तविक राष्ट्रीय आय या वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर को आर्थिक वृद्धि की दर कहा जाता है।

### (ii) अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन

विकास के साथ–साथ अर्थव्यवस्था की संरचना (अर्थव्यस्था के क्षेत्रों की स्थिति) में भी परिवर्तन होता है। जैसे–जैसे अर्थव्यस्था विकसित होती जाती है, राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र (कृषि) का अंश गिरता जाता है तथा द्वितीयक (उद्योग) एवं तृतीयक (सेवा) क्षेत्र का अंश बढ़ता जाता है। भारत में 1950–51 में राष्ट्रीय आय में कृषि का अंश 50 प्रतिशत से अधिक था जो 2015–16 में कम होकर 15 प्रतिशत के लगभग रहा है। राष्ट्रीय आय में उद्योग तथा सेवा क्षेत्र के योगदान में भारी वृद्धि हुई। द्वितीयक (उद्योग) क्षेत्र का राष्ट्रीय आय में अंश बढ़कर एक चौथाई से अधिक हो गया है। राष्ट्रीय आय में सेवा क्षेत्र का अंश सर्वाधिक तेजी से बढ़ा है। वर्तमान में राष्ट्रीय आय का लगभग 60 प्रतिशत भाग सेवा क्षेत्र द्वारा उत्पादित होता है। स्पष्ट है कि भारत की राष्ट्रीय आय में प्राथमिक क्षेत्र का अंश निरन्तर कम हो रहा है तथा द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र का अंश लगातार बढ़ रहा है। द्वितीयक क्षेत्र की तुलना में तृतीयक क्षेत्र अधिक तेजी से बढ़ा है। अर्थव्यवस्था की संरचना का यह परिवर्तन इसके विकासशील स्वरूप को व्यक्त करता है।

यह माना जाता है कि द्वितीयक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र की अपेक्षा अधिक रोजगार सृजन करता है। अतः द्वितीयक क्षेत्र की अपेक्षाकृत धीमी वृद्धि के कारण भारत में बेराजगारी की समस्या अधिक गम्भीर बनी है।

### (क) विशाल तथा तेजी से बढ़ता सेवा क्षेत्र

सभी विकसित राष्ट्रों में विशाल सेवा क्षेत्र पाया जाता है। लगातार तेज वृद्धि दर के कारण भारत में भी सेवा–क्षेत्र अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा क्षेत्र बन गया है। वर्तमान में अकेला सेवा–क्षेत्र राष्ट्रीय आय का लगभग 60 प्रतिशत भाग उत्पादित कर रहा है। इसके साथ ही सेवा–क्षेत्र की वृद्धि दर भी कृषि एवं उद्योगों की वृद्धि दर से पर्याप्त ऊँची बनी हुई है। विश्व सेवा व्यापार के मामले में भी भारत विश्व के शीर्ष दस राष्ट्रों में शामिल है तथा इसके सेवा क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में उभरने की प्रबल सम्भावना है। व्यापक तथा लगातार बढ़ता हुआ सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

### (ख) व्यावसायिक संरचना मे परिवर्तन

भारत में व्यावसायिक संरचना मे होने वाले परिवर्तन भी बताते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। 1951 में कार्य शक्ति का लगभग 72 प्रतिशत कृषि तथा सहायक क्षेत्रों में कार्यरत था। कृषि पर निर्भरता में लगातार कमी आयी है। वर्तमान कार्यकारी जनसंख्या का 50 प्रतिशत से भी कम भाग कृषि तथा सहायक क्षेत्रों में रोजगाररत है। आज भारत की

आधे से अधिक कार्यशक्ति उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर रही है।

### (iii) आर्थिक एवं सामाजिक आधारसंरचना में सुधार

भारत में आर्थिक एवं सामाजिक आधारसंरचना में तेजी से सुधार हो रहा है। विद्युत उत्पादन की भारत की कुल स्थापित क्षमता में पिछले 65 वर्षो में लगभग 100 गुना वृद्धि हुई है। स्वतन्त्रता के समय भारत में सड़कों की कुल लम्बाई लगभग 4 लाख किलोमीटर थी, जो वर्तमान में लगभग 50 लाख किलोमीटर हो गयी है। इसी प्रकार बैंकिग तथा बीमा सेवाओं का भी व्यापक विस्तार हुआ है। साक्षरता दर 1951 में 18.3 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गयी। इसी प्रकार जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 1951 में 32.1 वर्ष थी, जो 2014 में 68 वर्ष हो गयी। आर्थिक एवं सामाजिक आधारसंरचना में ये सुधार विकास के आधारस्तम्भ हैं। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के आधार पर हम कह सकते हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था विकास कर रही है।

### (iv) अन्य कारक

यहाँ विदेशी व्यापार की संरचना में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। भारत की जनसंख्या वृद्धि की दर में भी पर्याप्त कमी हुई है। 1961 से 1971 के दशक में भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर 24. 80 प्रतिशत थी। यह दर 2001 से 2011 के दशक में कम हो कर 17.64 प्रतिशत रह गयी। ये सभी कारक भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के सूचक हैं।

अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था में अविकसित अर्थव्यवस्था के अनेक लक्षण पाये जाते हैं, फिर भी यह विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर हो रही है। विकास की इस तीव्र गति के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था निश्चित ही एक दिन विकसित अर्थव्यवस्था बन जायेगी।

## 15.3 आर्थिक सुधार (उदारीकरण निजीकरण एवं वैश्वीकरण)

स्वतंत्रता के बाद भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था के ढांचे तथा नियोजित विकास की नीति को अपनाया था। सार्वजनिक क्षेत्र को प्रभावशाली स्थान देकर इसे विकास का मुख्य चालक बनाया गया। निजी क्षेत्र को नियंत्रणों के अधीन रखा गया। 1950 से 1990 के दौरान अर्थव्यवस्था के संचालन एवं प्रबंधन हेतु इतने अधिक नियम बनाये गये कि विकास–प्रक्रिया लगभग अवरुद्ध हो गयी। इसके अतिरिक्त सरकार को प्रतिरक्षा तथा सामाजिक क्षेत्र पर भी अपने संसाधनों का एक बड़ा भाग खर्च करना पड़ा। अनेक बार तो अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं तथा अन्य देशों से उधार ली गई विदेशी मुद्रा को सरकार द्वारा अविवेकशील ढंग से उपभोग कार्यों पर खर्च कर दिया गया। सरकार के व्यय, उसकी प्राप्तियों से लगातार ऊँचे बने रहे। इन व्ययों की पूर्ति हेतु सरकार बढ़ती मात्रा में ऋण लेती जा रही थी। इन खर्चों को नियंत्रित करने हेतु कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया। सरकारी नीतियों में राजकोषीय अनुशासन का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

राजकोषीय अनुशासन का तात्पर्य सरकार की उन नीतियों तथा प्रयासों से है जो सरकारी घाटे तथा सरकारी ऋणों के भार को कम करने हेतु अपनाये जाते हैं।

राजकोषीय अनुशासनहीनता के साथ–साथ भारतीय अर्थव्यवस्था बढ़ते व्यापार घाटे की भी शिकार थी। 1990 से पहले बढ़ते आयातों को सीमित करने तथा निर्यात संवर्धन पर भी पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया।

### व्यापार घाटा–

एक देश के आयातों का उस देश के निर्यातों पर आधिक्य उसका आर्थिक माप है। यह माप बताता है कि देश के आयातों का मूल्य उस देश के निर्यातों के मूल्य से कितना अधिक है। यह एक देश के वस्तु व्यापार में घाटे का माप है।

1950 से 1990 की आर्थिक नीतियों में उद्योगों को अनावश्यक संरक्षण प्रदान किया गया। फर्मों एवं अर्थव्यवस्था के अन्य निकायों का अकुशल प्रबन्धन किया गया। संसाधनों के उपयोग में कार्यकुशलता का अभाव था। अर्थव्यवस्था की सम्पूर्ण संरचना ही दोषपूर्ण हो गई थी। इससे अर्थव्यवस्था में उत्पादन लागतें बढ़ गयीं तथा उत्पादकता का स्तर बहुत ही निम्न हो गया। उत्पादन की धीमी वृद्धि, अत्यधिक सार्वजनिक व्यय तथा अन्य कारणों ने महंगाई (मुद्रास्फीति) की समस्या उत्पन्न कर दी। वस्तुओं की तेजी से बढ़ती कीमतों ने सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। इन सभी स्थितियों के कारण भारत का भुगतान संतुलन प्रतिकूल बना रहा तथा विदेशी मुद्रा भण्डार बहुत कम हो गया। नब्बे के दशक के प्रारम्भ में भारत के पास मुश्किल से लगभग दो सप्ताह के आयात के लिए विदेशी मुद्रा भण्डार शेष रह गया था।

### भुगतान–संतुलन –

एक देश का, शेष विश्व के साथ, एक वर्ष में समस्त लेन–देन का संक्षिप्त विवरण भुगतान–संतुलन कहलाता है। राजकोषीय असंतुलन, अर्थव्यवस्था की दोषपूर्ण संरचना तथा भुगतान–संतुलन के संकट की स्थितियों को सुधारने के लिए भारत सरकार ने नई आर्थिक नीति के तहत जुलाई 1991 में आर्थिक सुधार लागू किये। यद्यपि आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया 1980 के दशक में ही प्रारम्भ हो गई थी लेकिन तब इन सुधारों को पूर्ण इच्छाशक्ति के साथ लागू नहीं किया गया था। अतः

ये संकट गम्भीर होते गये। इस स्थिति में भारत ने 1991 में दो अन्तरराष्ट्रीय संस्थाओं, विश्व बैंक तथा अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से वित्तीय सहायता की मांग की। इन संस्थानों ने भारत को सशर्त ऋण प्रदान किया। भारत ने इनकी शर्तों की पालना करते हुए 1991 में नई आर्थिक नीति की घोषणा की तथा आर्थिक सुधार लागू किये।

विश्व बैंक –वर्ष 1944 में ब्रेटनवुड्स सम्मेलन के समझौते के द्वारा अन्तरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक की स्थापना की गई। इसे सामान्यतः विश्व बैंक के नाम से जाना जाता है।

आर्थिक सुधारों के अन्तर्गत आर्थिक स्थिरीकरण तथा संरचनात्मक सुधार हेतु उपाय लागू किये गये। आर्थिक स्थिरीकरण के उपाय अल्पकालिक प्रकृति के थे। इनके अन्तर्गत भुगतान संतुलन के संकट तथा मुद्रा स्फीति की समस्या को नियंत्रित करने के उपाय शामिल थे। संरचनात्मक सुधार दीर्घकालीन प्रकृति के थे। इनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था की संरचना में सुधार तथा अर्थव्यवस्था की कुशलता में वृद्धि करना था। इन सुधारों के अन्तर्गत सरकार ने अपनी नीतियों को पुनः परिभाषित किया तथा कई नई नीतियां प्रारम्भ कीं। आर्थिक सुधारों को उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की प्रक्रिया के द्वारा लागू किया गया।

### 15.3.1 उदारीकरण

अर्थशास्त्र में उदारीकरण का आशय आर्थिक नीतियों, नियमों तथा कानूनों के सरलीकरण की प्रक्रिया से है। 1990 ई. से पूर्व अपनायी गयी विकास रणनीति में सरकार की भूमिका अर्थव्यवस्था के नियंत्रक तथा उत्पादक की थी। इस भूमिका का निर्वहन करने हेतु अनेक नियंत्रण तथा प्रतिबन्ध लगाये गये। सरकार द्वारा 1991 में नई आर्थिक नीति के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में अवांछित नियंत्रणों तथा प्रतिबन्धों को समाप्त करने के लिए जो आय लागू किये गये उन्हें उदारीकरण कहा गया। इनके अन्तर्गत जुलाई 1991 में नई औद्योगिक नीति घोषित की गई तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ की गयी। इनमें वित्तीय क्षेत्र, बाहरी क्षेत्र, विदेशी विनिमय, कर व्यवस्था आदि में व्यापक सुधार करते हुए अनेक अनावश्यक नियमों तथा नियंत्रणों को समाप्त किया गया।

उदारीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था समाजवादी मिश्रित अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी मिश्रित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। इससे सरकारी हस्तक्षेप में कमी आई तथा भारतीय अर्थव्यवस्था मुक्त बाजार या पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के स्वरूप की ओर उन्मुख हुई। उदारीकरण से अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक दृढ़तायें समाप्त हो गयीं। अतः कहा जा सकता है कि आर्थिक क्षेत्रों तथा नीतियों में सरकारी बाधाओं को समाप्त करके अर्थव्यवस्था में उत्पादन तथा व्यापार की क्रियाओं को सरल बनाने की प्रक्रिया ही 'उदारीकरण' है।

जिसे भारत में उदारीकरण कहा गया, वस्तुतः वह अर्थव्यवस्था में पश्चिमी अनुप्रयोगों को बिना सोचे समझे लागू करना है। भारत मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूँजीवादी झुकाव रखने के कारण, एक ऐसे दोराहे पर आकर खड़ा हो गया था, जहां से स्वदेशी की मौलिक अर्थ संस्कृति की ओर लौटना असंभव था। इस स्थिति का फायदा पूँजीवादी देशों ने उठाया और भारत विश्व मंच पर आर्थिक उदारवाद के नाम पर एक नई प्रयोगशाला के रुप में उभरकर सामने आया। हमारी विशाल जनसंख्या और उसमें भी सक्षम मध्यम वर्ग पूँजीवादी देशों के निशाने पर आ गया। जिस सरकार ने वैश्वीकरण के नाम पर देश को बाजार का रूप दे दिया था, उसके पीछे आने वाली सरकारों के लिए नए रास्ते पर चलना असंभव था।

### 15.3.2 निजीकरण

अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की भूमिका में वृद्धि करने की प्रक्रिया निजीकरण कहलाती है। इसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र को अधिक अवसर प्रदान किये जाते हैं तथा सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका घटायी जाती है। निजीकरण की प्रक्रिया में उन सभी आर्थिक नीतियों को शामिल किया जाता है जो निजी क्षेत्र के विस्तार को बढ़ावा देती हैं। परम्परागत तौर पर निजीकरण का तात्पर्य सार्वजनिक या राज्य संपत्तियों को निजी स्वामित्व या नियंत्रण में देने की प्रक्रिया से लिया जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात् 1990 तक अपनाई गयी औद्योगिक नीतियों में अनेक उद्योगों को सिर्फ सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित कर दिया गया था तथा अनेक उद्योगों की स्थापना हेतु लाइसेंस की अनिवार्यता कर दी गई थी। इन नीतिगत निर्णयों ने निजी क्षेत्र के विकास को सीमित कर दिया। फलस्वरूप सार्वजनिक क्षेत्र का अनावश्यक विस्तार हो गया तथा इस क्षेत्र में उत्पादकता बहुत कम हो गयी। सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक उद्यम सरकार पर बोझ बन गये थे। 1991 की औद्योगिक नीति में औद्योगिक लाइसेंसिंग की लगभग समाप्ति तथा सार्वजनिक क्षेत्र के आरक्षण प्राप्त उद्योगों की संख्या में भारी कमी ने निजी क्षेत्र के लिए विकास के नये द्वार खोल दिये। निजीकरण के द्वारा 1991 में अर्थव्यवस्था के उन क्षेत्रों को भी खोल दिया गया, जो अब तक निजी क्षेत्र के लिए वर्जित थे।

निजीकरण के अर्न्तगत सरकारी क्षेत्र में विनिवेश भी किया जाता है। यह भी निजीकरण का एक उपाय है। शुद्ध रूप में विनिवेश सम्पदाओं के तरलीकरण की क्रिया है, लेकिन सामान्य तौर पर इसका अर्थ राज्य द्वारा सार्वजनिक उद्यमों मे अपना अंश निजी क्षेत्र को बेच देने से है। सरकार या राज्य सार्वजनिक उद्यम में अपने हिस्से का एक भाग या सम्पूर्ण हिस्से को निजी क्षेत्र को बेच सकता है। कितना हिस्सा बेचा जाये, यह सरकार के नीतिगत निर्णयों पर निर्भर करता हैं। भारत में भी निजीकरण हेतु 1991–92 में विनिवेश कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। निजीकरण से सरकार को राजकोषीय अनुशासन स्थापित करने में सहायता मिली। इससे अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति में सुधार हुआ।

### 15.3.3 वैश्वीकरण

घरेलू अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण वैश्वीकरण कहलाता है। वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का विस्तार उनकी राजनैतिक सीमाओं के बाहर होता है। वैश्वीकरण से आर्थिक खुलेपन तथा देशों के बीच आर्थिक निर्भरता में वृद्धि होती है। वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों में विभिन्न राष्ट्रों के बीच वस्तुओं का मुक्त प्रवाह, सेवाओं का मुक्त प्रवाह, पूँजी का निर्बाध प्रवाह एवं समेकित वित्तीय बाजार, श्रम का स्वतन्त्र प्रवाह, प्रौद्यौगिकी का स्वतन्त्र प्रवाह तथा ज्ञान का प्रसार आदि सम्मिलित हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत ने विदेशी व्यापार तथा विदेशी निवेश पर अनेक प्रतिबंध लगाये थे। घरेलू उत्पादकों को विदेशी प्रतियोगिता से संरक्षण प्रदान करने के लिए इसे अनिवार्य माना गया। वर्ष 1991 में सरकार ने यह निश्चय किया कि भारतीय उत्पादकों के लिए विश्व के उत्पादकों से प्रतियोगिता करने का समय आ गया है। यह स्वीकार किया गया कि प्रतियोगिता से उद्यमों की निष्पादकता तथा उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार होगा। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में भारत में विदेशी व्यापार तथा विदेशी निवेश पर से प्रतिबंधों को काफी सीमा तक हटा दिया गया। व्यापार अवरोधकों को हटाकर आयातों का उदारीकरण किया गया कुछ को छोड़कर अधिकांश वस्तुओं के स्वतंत्र व्यापार की अनुमति दे दी गई है।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां वैश्वीकरण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी वह है, जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण तथा स्वामित्व रखती है। वर्तमान में विभिन्न देशों के बीच सेवाओं में निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान–प्रदान हो रहा है। सूचना एवं संचार–प्रौद्योगिकी के विकास ने वैश्वीकरण को तीव्र गति प्रदान की है। इसने विभिन्न देशों के बीच सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में मुख्य भूमिका निभायी है। भारत ने भी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की बदौलत अपनी सेवाओं को अन्तरराष्ट्रीय बाजार में बेचकर वैश्वीकरण के लाभों को भुनाया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने सम्पूर्ण विश्व में संसाधनों के आवंटन में सुधार कर इसे अधिक कार्यकुशल बनाया है। इससे उत्पादन लागतें गिरी हैं तथा उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। वैश्वीकरण की इस लाभदायक प्रक्रिया को लागू करने एवं सफल बनाने में अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन ने उल्लेखनीय भूमिका अदा की है ।

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना 1 जनवरी 1995 को हुई। यह राष्ट्रों के बीच व्यापार के नियमों के निर्धारण तथा नियमन का कार्य करता है। यह बहुपक्षीय व्यापार समझौतों के क्रियान्वयन एवं नियंत्रण का कार्य करता है। यह अपने सदस्य राष्ट्रों को व्यापार समझौतों या विचार–विमर्श के लिए उपयुक्त मंच प्रदान करता है। यह विभिन्न राष्ट्रों के बीच व्यापार संबन्धी विवादों के निपटारे का कार्य भी करता है।

## 15.4 स्वदेशी की अवधारणा

स्वदेशी की अवधारणा भारत की आर्थिक स्थिति को अधिक सुदृढ़ करने की दृष्टि से एक प्रभावशाली आर्थिक रणनीति है। स्वदेशी शब्द का अर्थ है ''स्वयं के देश का''। वैश्वीकरण के इस दौर में अनेक विदेशी कम्पनियां भी भारत में आकर उत्पादन करने लगी हैं। इस बदलते परिप्रेक्ष्य में स्वदेशी शब्द का उपयोग भारतीय कम्पनियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के लिए किया जाने लगा है। अतः वर्तमान समय में स्वदेशी की अवधारणा स्वयं के देश की कम्पनियों तथा उद्योगों द्वारा देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को अपनाये जाने तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा उत्पादित पर बल देती है। टाटा, गोदरेज, अमूल, हीरो, बजाज, पतंजलि आदि के उत्पाद भारत के स्वदेशी उत्पादों के उदाहरण हैं।

स्वदेशी की भावना भारतीय अर्थव्यवस्था में कोई नया परिवर्तन नहीं है। इस भावना ने अनेक बार राष्ट्र को एकजुट करने का कार्य किया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वदेशी की भावना ने महती भूमिका अदा की है। स्वतंत्रता के स्वदेशी आंदोलन में ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार करके घरेलू उद्योग धन्धों को पुनर्जीवित करने की रणनीति अपनायी गयी थी। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को स्वतंत्रता आंदोलन में एक हथियार के रूप में काम में लिया। गांधीजी ने जन–जन को जागरूक बनाकर स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरणा दी। महात्मा गांधी का मत था कि भारत स्वतंत्र तथा स्वशासित ही नहीं, आत्मनिर्भर भी होना चाहिए। भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से स्वदेशी की अवधारणा एक

प्रभावशाली अवधारणा है।

1990 के दशक के प्रारम्भ से शुरु हुये वैश्वीकरण के दौर में स्वदेशी का विचार कुछ समय के लिए अपनी उपयोगिता खो बैठा था। धीरे–धीरे विकासशील राष्ट्रों को यह अनुभव हुआ कि विकसित राष्ट्र विश्व व्यापार संगठन के नियमों की अनदेखी करते हैं तथा मुक्त व्यापार की नीति का ईमानदारी से पालन नहीं करते हैं। विकासशील देशों को वैश्वीकरण से कुछ लाभ तो हुए, लेकिन हानियां अधिक हुईं। वैश्वीकरण एवं प्रतिस्पर्धा के दबाव में अनेक भारतीय उद्योग–धन्धे बन्द हो गये तथा बेरोजगारी की समस्या अधिक जटिल हो गई। अन्तरराष्ट्रीय नियमों एवं समझौतों के कारण भारत सरकार विदेशी कम्पनियों के आगमन पर प्रभावी नियंत्रण नहीं लगाती है। इन स्थितियों ने भारत की जनता को विचार के लिए बाध्य किया। न्यायसंगत वैश्वीकरण के अभाव में स्वदेशी की भावना पुनः जोर पकड़ने लगी। वर्तमान समय में बढ़ती राष्ट्रवादी भावना ने स्वदेशी को अधिक अर्थपूर्ण बना दिया है।

स्वदेशी की भावना एक सामाजिक आर्थिक क्रांति उत्पन्न करती है। यह देशवासियों में देश के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना उत्पन्न करती है। 'स्वदेशी' से होने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण लाभ हैं –

1. 'स्वदेशी' की अवधारणा से भारतीय उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। इससे भारतीय उद्योगों के विकास के लिए अच्छे अवसर उत्पन्न होगें।
2. स्वदेशी उत्पादों को अपनाये जाने से देश के घरेलू उत्पाद तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी।
3. भारतीय कम्पनियां विदेशी कम्पनियों की तुलना में अधिक श्रमशील होती है। अतः स्वदेशी को बढ़ावा मिलने पर भारत में रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होना सुनिश्चित है।
4. घरेलू उत्पादन बढ़ने से आयातों में कमी आयेगी तथा आयातों पर खर्च होने वाली मूल्यवान विदेशी मुद्रा की बचत होगी।
5. विदेशी कम्पनियां लाभ तथा लाभांश के रूप में भारी धनराशि भारत से अपने देशों में ले जाती हैं। स्वदेशी को अपनाने से इस धन निष्क्रमण पर रोक लगेगी।
6. स्वदेशी को बढ़ावा मिलने से देश की आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। संकटकालीन स्थितियों में आत्मनिर्भरता देश के लिए बहुत बड़ा सुरक्षा कवच होती है।
7. घरेलू उत्पादन बढ़ने से सरकार को अपेक्षाकृत अधिक राजस्व प्राप्त होता है।
8. स्वदेशी कम्पनियों की कार्य–संस्कृति भी देश की परिस्थितियों के अनुकूल होती है। ये कम्पनियां प्राकृतिक संसाधनों का सीमित उपयोग करती है।
9. कुछ राष्ट्र भारत को सामान बेचकर अत्यधिक लाभ कमाते हैं तथा अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का विरोध करके भारत के लिए ही समस्याएं उत्पन्न करते हैं। स्वदेशी उत्पादों को अपनाये जाने से ऐसे राष्ट्रों पर दबाव उत्पन्न होगा।
10. स्वदेशी की भावना राष्ट्र–प्रेम को बढ़ाती हैं। राष्ट्रवाद देश के विकास के लिए एक प्रभावशाली तत्व है।

'स्वदेशी' के परिप्रेक्ष्य में हमें यह समझना चाहिए कि 'उदारीकरण', 'भूमण्डलीकरण' और 'वैश्वीकरण' के नाम पर देश के मानव व प्राकृतिक संसाधनों का इस प्रकार शोषण नहीं होना चाहिए कि भविष्य में हमारे लिए कुछ भी शेष न रहे। भारत की सभ्यता और संस्कृति में वैश्वीकरण की अवधारणा पहले से ही इस रूप में विद्यमान है कि सारी दुनिया एक परिवार है और इसका प्रत्येक सदस्य नीरोग एवं सुखी रहना चाहिए। भारतीय परम्परा में दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के नीरोग एवं सुखी रहने का आधार दूसरे का ध्यान रखने पर केन्द्रित है, जबकि वर्तमान में यूरोप और अमेरिका से वैश्वीकरण को जिस रूप में प्रतिष्ठित किया जा रहा है, वह रूप केवल मुनाफा कमाने पर केन्द्रित है। स्वदेशी अर्थव्यवस्था ही वह अवधारणा है जिसके अन्तर्गत सभी च्यक्ति , परिवार, समाज और राज्य के कल्याण से समस्त विश्व के कल्याण की ओर अग्रसर होने का प्रयास करें। हम सभी व्यष्टि से समष्टि की ओर बढ़ें।

## 15.5 कौशल विकास

उत्पादन के साधनों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन श्रम होता है। जब श्रम को शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशिक्षण के द्वारा योग्यता तथा कौशल प्रदान कर दिया जाये तो वह 'मानव पूँजी' कहा जाता है। मानव पूँजी का तात्पर्य उच्च कौशल, योग्यता, ज्ञान और अनुभवयुक्त मानवीय संसाधन से है। स्पष्ट है कि कौशल एक मानवीय संसाधनों को मानवीय पूँजी में परिवर्तित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। कौशल से श्रम की उत्पादकता में वृद्धि होती है। किसी कार्य को अधिक अच्छे तरीके से सम्पन्न करने की योग्यता और क्षमता को कौशल कहा जाता है। कौशल विकास के द्वारा श्रम शक्ति को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है। ज्ञातव्य है कि उच्च उत्पादकता का स्तर श्रम के लिए रोजगार अवसरों तथा गुणवत्ता में वृद्धि करता है। यह कहा जा सकता है कि कौशल की उपलब्धता, श्रम के लाभ उत्पादन तथा कल्याण का मूल्यवान निर्धारक है। आज भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या कार्यकारी आयु वर्ग (15 वर्ष से 64 वर्ष) में शामिल है। जब जनसंख्या उत्पादक होती है तो वह देश के लिए हितकारी होती है, अन्यथा वह अहितकारी होती है। कौशल विकास से व्यक्ति की योग्यता उत्पादकता एवं जीवन की

गुणवत्ता में वृद्धि होती है तथा वह राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि में अधिक योगदान दे पाता है ।

कौशल की इस महता को देखते हुये भारत जैसे श्रम–प्रधान देश में कौशल–विकास पर ध्यान दिये जाने की नितांत आवश्यकता है। देश की प्रगति में कौशल–विकास के विशेष महत्व को समझते हुऐ भारत सरकार द्वारा ''विश्व युवा कौशल दिवस'' के अवसर पर 15 जुलाई 2015 को राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन (National Skill Deveplopment Mission) प्रारम्भ किया गया। इस मिशन का प्रमुख ध्येय कौशल प्रदान करने वाले प्रशिक्षणों के माध्यम से कुशल भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है। इस मिशन के मुखिया माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हैं। स्वतंत्रता के पश्चात यह प्रथम अवसर है कि कौशल विकास के माध्यम से युवाओं को रोजगार–योग्य बनाने के लिए कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय का गठन किया गया है। यह भारत सरकार की एक ऐसी पहल है जिसमें अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा पाठयक्रमों की सहायता से युवाओं को कौशल प्रदान किया जा रहा है। अकेले प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत लाखों लोगों ने अपने जीवन को समृद्ध बनाया है। कौशल विकास को वर्तमान भारत सरकार द्वारा अपनाये गये विभिन्न जनकल्याणकारी उपायों में से एक उपाय कहा जा सकता है। हम जानते हैं कि राष्ट्र की सफलता सदैव वहाँ की मानव शक्ति की सफलता पर निर्भर करती है। कौशल विकास से भारत की मानव शक्ति को अनेक लाभ तथा अवसर प्राप्त होंगे। इससे भारत का प्रत्येक नागरिक सम्पन्नता तथा सम्मान से युक्त जीवन जीने में सक्षम होगा।

## महत्वपूर्ण बिन्दु

1. पिछले दशकों में भारत की राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में होने वाली तीव्र एवं सतत वृद्धि इसकी विकासशीलता का लक्षण है।
2. अर्थव्यवस्था के स्वरूप, व्यावसायिक संरचना तथा आधारसंरचना में होने वाले अनुकूल परिवर्तन भी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकासशील स्वरूप को स्पष्ट करते हैं।
3. 1991 ई. में भारत ने अपनी विकास रणनीति में बड़ा परिवर्तन करते हुए आर्थिक सुधारों की घोषणा की।
4. राजकोषीय असंतुलन, अर्थव्यवस्था की दोषपूर्ण संरचना, भुगतान संतुलन संकट आदि को सुधारने के लिए नयी आर्थिक नीति के अन्तर्गत आर्थिक सुधारों को अपनाया गया।
5. आर्थिक सुधारों को उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की प्रक्रिया के द्वारा लागू किया गया।
6. अर्थव्यवस्था में अवांछित नियंत्रणों एवं प्रतिबंधों को समाप्त करके सरकार को सुविधा प्रदाता की भूमिका में ले आने की प्रक्रिया उदारीकरण है।
7. निजीकरण का तात्पर्य उन सभी नीतियों से है जो अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र को बढ़ती हुई भूमिका प्रदान करती है तथा सरकार का दायरा सीमित करती है।
8. घरेलू अर्थव्यवस्था के विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण की प्रक्रिया वैश्वीकरण कहलाती है।
9. आर्थिक सुधारों से भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना में सुधार हुआ तथा आर्थिक विकास की दर तेज हुई है।
10. स्वदेशी की अवधारणा भारतीय कम्पनियों के उत्पादों को अपनाने तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा उत्पादित एवं आयातित माल का त्याग करने पर बल देती हैं।
11. स्वदेशी उत्पादों को अपनाने से भारत को अनेक सामाजिक एवं आर्थिक लाभ प्राप्त होंगे। स्वदेशी की अवधारणा के प्रोत्साहन से भारतीय अर्थव्यवस्था की आत्मनिर्भरता में वृद्धि होगी।
12. कौशल विकास से श्रम की उत्पादकता में वृद्धि होती है। युवाओं को कौशल प्रदान करके रोजगार योग्य बनाने के लिए सरकार द्वारा गम्भीर प्रयास किया जा रहा है।

## अभ्यास प्रश्न

### (अ) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. वर्ष 2015 में भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय कितनी थी ?
2. जीवन की गुणवत्ता का माप किन कारकों की सहायता से तय किया जाता है ?
3. स्वतंत्रता के समय भारत की कितनी प्रतिशत श्रम शक्ति कृषि में रोजगाररत थी ?
4. 2001–2011 ई. के दौरान भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर कितनी रही ?
5. सम्पूर्ण विश्व के लिए मानव विकास रिपोर्ट कौनसी संस्था द्वारा तैयार की जाती है ?
6. भारत सरकार द्वारा आर्थिक सुधार कब लागू किये गये ?
7. उदारीकरण किसे कहते हैं ? बताइये।
8. निजीकरण का अर्थ बताइये।
9. वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है ?
10. मानव पूँजी किसे कहा जाता है ?
11. स्वदेशी की अवधारणा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

### (ब) लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. जीवन की निम्न गुणवत्ता किस प्रकार भारतीय अर्थव्यवस्था के अविकसित स्वरूप को व्यक्त करती है ?

**2.** भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन को व्यक्त करने वाली जनांकिकीय विशेषताओं को बताइये।

**3.** भारतीय अर्थव्यवस्था की कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को समझाइए।

**4.** पिछले दशकों में भारत की राष्ट्रीय आय में होने वाले परिवर्तन क्या संकेत देते हैं?

**5.** उदारीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप और संरचना में क्या–क्या परिवर्तन उत्पन्न किए हैं ?

**6.** विनिवेश से आप क्या समझते हैं ?

**7.** वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों को समझाइये ।

**8.** वैश्वीकरण के लाभ बताइये।

**9.** वैश्वीकरण के दौर में स्वदेशी की अवधारणा किन कारणों से प्रासंगिक बन गयी है ?

**10.** कौशल विकास पर टिप्पणी लिखिए।

## (स) निबन्धात्मक प्रश्न

**1.** भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशीलता को दर्शाने वाली विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**2.** 1990 के दशक में आर्थिक सुधार अपनाये जाने के क्या कारण थे ? विस्तृत विवेचना कीजिए।

**3.** नयी आर्थिक नीति के अर्न्तगत अपनाये गये आर्थिक सुधारों का वर्णन कीजिए।

**4.** स्वदेशी उत्पादों को अपनाये जाने से उत्पन्न होने वाले लाभों को बताइये।

5. कौशल विकास का क्या महत्त्व है? कौशल विकास हेतु सरकार द्वारा कौन–कौन से कदम उठाये गये हैं?